अन्तराष्ट्रिय महिला दिवस

महा निदेशक का शन्देश

चूज़ टू चैलेंज/ चुनौती दें: "नवीन सामान्य" में लैंगिक समानता हेतु महिलाओं का नेत्रियों/नेताओं के रूप में सशक्तिकरण

लैंगिक समानता हम सभी के कल्याण हेतु अनिवार्य है, एवं नेतृत्व में लैंगिक समानता को प्रोत्साहन देना इस कार्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। 2015 में प्रथम बार प्रस्तुत किये जाने से लेकर, सतत विकास लक्ष्यों (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स, एसडीजी) ने लैंगिक समानता पर कार्य की ओर अत्यावश्यक अंतर्राष्ट्रीय ध्यान खींचा है; विशेषतः एसडीजी 5 एवं नेतृत्व पर इसके विशिष्ट लक्ष्य के माध्यम से - 5.5: राजनैतिक, आर्थिक, व सार्वजनिक जीवन में निर्णय लेने के सभी स्तरों पर महिलाओं की सम्पूर्ण व प्रभावी भागीदारी एवं नेतृत्व के समान अवसर सुनिश्चित करना।

हमारे "नवीन सामान्य" को चिन्हित करने वाले शीघ्रता से होते जलवायु, सामाजिक-आर्थिक, व महामारी-सम्बंधित परिवर्तनों ने महिलाओं पर असमान बोझ डाल दिया है। अनुभव एवं अध्ययन/शोध यह दिखाते हैं कि महिलाओं व पुरुषों के नवीन वास्तविकताओं को समझने व उनसे जूझने के तरीके/प्रकार भिन्न हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के रूप में हमारी भूमिकाओं, उत्तरदायित्व, व जीवन के अनुभवों को परभाषित करने वाले सामाजिक रूप से निर्मित नियम व शक्ति-सम्बन्ध सर्वथा भिन्न हैं, जो कि विभिन्न प्रकार की अंतर्दृष्टि व दृष्टिकोणों में योगदान करते हैं और इन्हें साझा करने व इनपर विचार करने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से, महिलाओं का नेत्रियों के रूप में सशक्तिकरण महत्वपूर्ण विमर्शों तक महिलाओं की आवाज़/राय पहुंचाने में सहायक होता है, एवं यह लैंगिक समानता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

महिलाएं वैश्विक कार्यबल का एक विशाल भाग हैं। परन्तु, शीर्ष संस्थानों में -- चाहे वह वैश्विक नीति व शासन के मंच हों अथवा विचार नेतृत्व पैनल व सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों में निर्णय लेने वाली संरचनाएं/निकाय हों -- महिलाओं का प्रतिनिधित्व अब भी कम है। विशेष रूप से प्रबंधन व नेतृत्व के उच्चतम स्तरों पर लैंगिक अंतर व्यापक है - जिसमें नियुक्ति पद व महिला प्रतिनिधित्व के मध्य एक सतत परस्पर-विरोध रहता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, 75 प्रतिशत सांसद पुरुष हैं, एवं 73 प्रतिशत प्रबंधकीय पदों पर उनकी उपस्थिति है। हिन्दुकुश हिमालय क्षेत्र में भी स्थिति ऐसी ही है, पर यह महत्वपूर्ण है कि हमारे अनेक क्षेत्रीय सदस्य देश व उनके राज्यों का नेतृत्व चयनित महिला प्रतिनिधियों ने किया है, अथवा कर रही हैं। संसद में महिला प्रतिनिधत्व (नेपाल में) 32.7 प्रतिशत से लेकर (म्यांमार में) 11.3 प्रतिशत तक है, परन्तु अधिकांश सरकारों द्वारा किये गए प्रावधानों के कारण क्षेत्र में महिला नेताओं की संख्या निरंतर बढ़ रही है।

गृहस्थी व समुदाय के स्तर पर, हिन्दुकुश क्षेत्र में महिलायें प्रायः न केवल अपने घरों व खेतों में, परन्तु सार्वजनिक जीवन -- सरकार एवं अन्य औपचारिक संस्थानों के साथ व्यापार व विमर्श -- में भी स्वयं को नेतृत्व की भूमिका में पाती हैं, क्योंकि अधिकांश पुरुष, विशेष रूप से युवा, शहरों एवं अन्य देशों में नौकरी हेतु पलायन कर जाते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से, कठिन समय एवं परिवार व समुदाय की आवश्यकताओं हेतु महिलायें आगे आती रही हैं। हिन्दुकुश क्षेत्र में होती प्रगति के साथ, शीर्ष पदों पर महिलाओं की उपस्थिति भले ही आम न हो, परन्तु अब यह दुर्लभ भी नहीं है। कोविड-19 महामारी के बीच महिलाएं हर मोर्चे पर -- स्वास्थ्यकर्मचारियों, सामुदायिक नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, एवं विधायकों के रूप में -- अग्रणी भूमिकाओं में उपस्थित हैं। हम महिला संगठनों, सभाओं/तंत्रों, व सामुदायिक समूहों को वायरस के प्रसार को रोकने एवं जिन्हें सर्वाधिक आवश्यकता है उनकी सेवा करने का अधिकांश उत्तरदायित्व उठाते देख रहे हैं। हिन्दुकुश हिमालय व दक्षिण एशियाई देशों में महिला उद्यमियों पर महामारी के प्रभाव को लेकर अंतर्राष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र एवं दक्षिण एशियाई महिला विकास मंच (साउथ एशियन वीमेन डेवलपमेंट फोरम) द्वारा हाल ही में संचालित एक त्वरित आकलन ने भी यह स्पष्ट किया है कि बड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए भी, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्रों में महिला उद्यमियों ने अभिनव उपाय करते हुए अपने व्यवसायों का विविध प्रकारों से पुनर्गठन कर के अपनी शक्ति-क्षमता एवं उत्तम नेतृत्व का प्रदर्शन किया है।

महिलाओं की शक्ति व नेतृत्व ने अनेक चुनौतियों पर विजय प्राप्त की है, अधिकतर उन मामलों में जहां उन्हें अपने परिवार व प्रबंधकों का पूरा सहयोग मिला। ऐसे सकारात्मक परिवर्तन हेतु व्यक्तिगत, पारिवारिक, संगठनात्मक, व कामकाजी दृष्टिकोण एवं व्यवहार में परिवर्तन की आवश्यकता होती है। इन्हें प्रोत्साहन देने के लिए संस्थानों व संगठनों को सहायक नीतियां, व्यवहार, प्रणालियाँ, व कार्य प्रक्रियाएं अपनानी चाहियें। यह अत्यावश्यक है कि ऐसा परिवर्तन हमसे प्रारम्भ हो -- असमान पहुँच व अवसर की पुराने समय से चली आ रही समस्याओं को स्पष्ट रूप से सम्बोधित करने एवं महिलाओं के लिए नेतृत्व की भूमिकाओं के समर्थन हेतु हमारे घर-परिवारों व कार्यस्थलों का पुनर्गठन/पुनर्निर्माण होना चाहिए।

एक संस्थान के रूप में, अंतर्राष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र में हमें हमारे लैंगिक समानता के परिवर्तनकारी दृष्टिकोण पर बहुत विश्वास है -- जिसके केंद्र में है महिलाओं को महत्वपूर्ण कर्मचारियों व नेत्रियों के रूप में संलग्न करना। हमारे लिए इस दृष्टिकोण का सबसे महत्वपूर्ण स्तम्भ है हमारे भागीदारों, जिन समुदायों के बीच हम कार्य करते हैं, एवं केंद्र में महिलाओं की क्षमता व नेतृत्व को सशक्त बनाना। संस्थागत रूप से, हमने महिला नेतृत्व को प्रोत्साहित करने में कुछ प्रगति की है और अपने क्षेत्रीय कार्यक्रमों व प्रयासों के माध्यम से महिलाओं की क्षमता व नेतृत्व निर्माण हेतु कार्य किया है -- उदाहरणार्थ, जहाँ संभव हो वहां प्रशिक्षण एवं महिला समुदाय नेताओं को समर्थन देकर। हमारे मूल्य श्रृंखला के कार्य में, हम महिलाओं को उत्पादक एवं सक्रिय प्रतिभागियों के रूप में प्रोत्साहित करने से लेकर स्वतंत्र उद्यमियों के रूप में उनका कौशल व क्षमता बढ़ाने तक आगे बढे हैं। यद्यपि, हम यह भी जानते हैं कि अभी हमें और बहुत कार्य करने की आवश्यकता है। हमें लैंगिक संबंधों को नवीन रूप देने के अपने प्रयासों को मज़बूत करने हेतु आर्थिक सशक्तिकरण के लिए तकनीकी एवं परिवर्तनकारी अंतःक्षेपों को जोड़ना होगा।

इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर, आइये हम अपने कार्य, एवं कार्यस्थलों, घरों, व समुदायों के प्रति अपने दृष्टिकोण के माध्यम से परिवर्तन की ओर कार्य करते रहने के अपने संकल्प को पुनः दोहराएं। आइये हम #चुनौतीदें।

पेमा जम्सो
महा निदेशक